IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, June 2024

उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं बहु बुद्धि का अध्ययन

डॉ.ज्योति ताम्रकार

प्राचार्य, एस. वी. एन. कॉलेज, सिरोंजा, सागर, मध्यप्रदेश

शोध सारांश : प्रस्तुत अध्ययन उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं बहु बुद्धि का अध्ययन का उद्देश्य उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु-बुद्धि का अध्ययन करना। परिकल्पनाएं: उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। वर्तमान अध्ययन की शोध विधि में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग उसके उद्देश्यों व विशेषताओं को ध्यान में रखकर किया गया है।शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श के रूप में 500 छात्र एवं 500 छात्राओं को यादृच्छिकीय न्यादर्श विधि से चयनित किया गया है। शोधकर्ता ने उपकरण के रूप में सांवेगिक बुद्धि परीक्षण – डॉ. अरूण कुमार सिंह एवं डॉ. श्रुतिनारायन एवं बहु बुद्धि परीक्षण प्रश्नावली का निर्माण डॉ. यशपाल सिंह एवं योगेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा किया गया है। निष्कर्ष में पाया कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु-बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

महत्वपूर्ण शब्द : उच्च प्राथमिक स्तर, संवेगात्मक बुद्धि, बहु बुद्धि

प्रस्तावना :

शिक्षा व्यक्तित्व का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक, अध्यात्मिक एवं संवेगात्मक विकास करती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान करने की योग्यता धारण करता है।, जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल जाता है, उसी प्रकार पशु समान मानव भी शिक्षा के प्रकाश से अपने भविष्य को उज्जवल तथा प्रकाशमय बनाता है। जिसके पश्चात् उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैली रहती है। शिक्षा एक ओर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है जिससे व्यक्ति की उन्नति तथा प्रगति होती है। वहीं दूसरी तरफ उसे समाज का महत्वपूर्ण नागरिक बनाकर देश प्रेम की भावना उसमें पैदा

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, June 2024

करती है। शिक्षा प्राचीन परम्पराओं और संस्कृतियों काएक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तानान्तरण करती है। शिक्षा बालक के हृदय में देश प्रेम, बलिदान व निहित स्वार्थों का त्याग की भावना को जाग्रत करती है, शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सार्थक भूमिका अदा करती है। निश्चय ही शिक्षा सतत् रूप से चलने वाली एक ऐसी गत्यात्मक प्रक्रिया है जो मानव को अपनी भूमिका प्रभावी ढंग से अदा करने में सक्षम बनाती है एवं राष्ट्र के विकास में सहयोग प्रदान करती है। शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णता का विकास है, जिसकी व्यक्ति में क्षमता है। शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक तथा छात्र दोनों के बीच परस्पर आदान-प्रदान होता है। शिक्षक अपने व्यक्तित्व तथा ज्ञान के विभिन्न अंगों के प्रभाव से छात्र के व्यवहार में परिवर्तन तथा सुधार करता है। जिससे वह सम्यक विकास की ओर अग्रसर होता है। छात्र को विद्यार्थी, शिक्षार्थी और शिष्य आदि नामों से जाना जाता है। उपरोक्त पक्षों के अतिरिक्त एक पक्ष और होता है, जिसको पाठ्यक्रम कहा जाता है। इन तीनों पक्षों में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान होता है। शिक्षा की कोई भी प्रक्रिया प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से शिक्षक के बिना पूर्ण नहीं हो सकती है।

शिक्षा के द्वारा ही बालक धर्म, राज्य, समुदाय, सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करता है जिससे उसमें राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक तत्व एवं अनिवार्य घटक समाज के साथ समायोजन की क्षमता का विकास होता है। प्रत्येक शिक्षार्थी को अपने जीवन में एक बड़ा लक्ष्य लेकर चलना चाहिए। जीवन में परिश्रम के बिना कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता है। शिक्षा विकास की धुरी है। शिक्षित व्यक्ति न केवल अपने परिवार के भरण पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है बल्कि वह सम्पूर्ण समाज, प्रदेश एवं देश के विकास में भी अमूल्य योगदान दे सकता है। किशोरावस्था बड़े ही तूफान और संघर्ष की अवस्था कहलाती है। उच्च प्राथमिक स्तर के बालक संवेगात्मक रूप मजबूत नहीं होते हैं और उनकी संवेगात्मक बुद्धि, बहु बुद्धि एवं व्यक्तित्व एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं, जिस कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती रहती है। प्रायः शैक्षिक उपलब्धि का कम होना और अधिक होना एक विद्यार्थी के व्यक्तित्व को सर्वाधिक प्रभावित करता है। प्रस्तुत शोध उक्त चरों का एक दूसरे के ऊपर प्रभाव को जानने का प्रयास है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास का उनके भावी जीवन में विशेष महत्व है। इस अवधारणा की पुष्टि माध्यमिक शिक्षा आयोग के इस कथन से हो जाती है जिसमें उन्होंने कहा है कि भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् कक्षा 7 के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, बहु बुद्धि का अध्ययन है। विद्यालय में वैयक्तिक भिन्नता से परिपूर्ण अनेक प्रकार के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं। उनमें से कुछ संवेगात्मक रूप

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, June 2024

से परिपक्व, कुछ बहु-बुद्धि की विशेषता वाले, कुछ प्रतिभाशाली, सामान्य, पिछड़े, मानसिक रूप से विकलांग, शारीरिक रूप से विकलांग आदि प्रकार के बालक होते हैं। सामान्यतः जो बालक संवेगात्मक रूप से परिपक्व होगा वह शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छे परिणाम प्राप्त करेगा। संवेगात्मक रूप से अपरिपक्व बालक का व्यक्तित्व भी पूर्णतः विकसित नहीं हो पाता। बालक के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए उसका जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आने वाली समस्याओं का समाधान विवेकपूर्ण विधि से करना आवश्यक है। उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में विवेकशीलता का विकास तभी किया जा सकता है जब उसकी बौद्धिकता का विकास बुद्धि की विभिन्न विमाओं को विकसित करके किया गया हो।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों का चयन संवेगात्मक बुद्धि व बहु बुद्धि के अध्ययन के लिए किया है। इस स्तर के बालकों की सामाजिक परिस्थितियों में समायोजन, अपने साथियों के साथ मित्रवत व्यवहार, व्यवहारिक तथा वातावरणीय कारक विशेष रूप बढ़ते हुए क्रम में होते हैं। उच्च प्राथमिक स्तर के बालक सीखने में सक्षम होते हैं। उनकी मौखिक अभिव्यक्ति, सुनने सम्बन्धी योग्यता, लेखन कार्य, मूलभूत पठन-पाठन की क्रियाओं में उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति तथा बौद्धिक योग्यताओं में सार्थक समानता दिखाई देती है। इस स्तर के बालक अनेक कारणों, जिनमें वंशानुक्रम और वातावरणीय कारण महत्वपूर्ण हैं, से प्रभावित होते हैं। शोध कार्य में अनुसंधानकर्ता ने बालकों की संवेगात्मक बुद्धि, बहु बुद्धि एवं व्यक्तित्व की अनेक विशेषताओं का अध्ययन करने का निश्चय किया है।

प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नवत् उद्देश्य हैं-

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु-बुद्धि का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना :

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

सम्बन्धित साहित्य :

डेनिज (2013) द्वारा भावी शिक्षकों में सांवेगिक बुद्धि व समस्या समाधान कौशल के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य सांवेगिक बुद्धि तथा समस्या समाधान कौशल के मध्य संबंध की जांच करना था, अध्ययन हेतु मुगला विश्वविद्यालय टर्की के 386 छात्र अध्यापकों (जिसमें 224 छात्राएं व 182 छात्र सम्मिलित थे) को न्यादर्श के रुप में लिया गया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, June 2024

सांवेगिक बुद्धि सार्थक रुप से समस्या समाधान कौशल से सहसम्बन्धित है। सांवेगिक बुद्धि में विकास करके समस्या समाधान कौशल को सुधारा जा सकता है।

रामी, बेडाकथी व जामशीदी (2014) ने भावात्मक बुद्धि तथा सृजनात्मक कारकों के मध्य सहसम्बंध पर अध्ययन किया। गुच्छ तकनीकी द्वारा 375 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में लिया गया। अध्ययन का परिणाम यह प्राप्त हुआ कि सृजनात्मकता के सहपैमाना तथा भावात्मक बुद्धि में सार्थक तथा धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

कारमेली व अन्य (2013) ने भावात्मक बुद्धि तथा सृजनात्मकताः उदारता तथा प्रबलता की मध्यस्त भूमिका पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन का उद्देश्य था कि भावात्मक बुद्धि कार्यस्थल पर सृजनात्मकता को बढ़ा सकती है या नहीं। अध्ययन में परिणाम इस प्रकार प्राप्त हुआ कि भावात्मक बुद्धि जिसकी ज्यादा होती है उसका उदारता का स्तर उच्च होता हैं। साथ ही यह सृजनात्मकता को बढ़ाता है।

अरोरा (2016) ने किशोरो की सृजनात्मकता तथा भावात्मक बुद्धि के मध्य सम्बन्ध पर अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में पंजाब (भारत) के लुधियाना जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 10$2 कक्षा के 200 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि द्वारा लिया गया। उपकरण के रूप में डॉ. एस.के तथा श्रीमति शुभा मंगल की इमोशनल इन्टेलीजेन्ट इनवेन्टरी तथा बाकर मेहन्दी का सृजनात्मक चिंतन परीक्षण का उपयोग किया गया। आँकड़ो का विश्लेषण टी-टेस्ट तथा सहसम्बन्ध गुणांक द्वारा किया गया। परिणाम यह प्राप्त हुआ कि भावात्मक बुद्धि तथा सृजनात्मक के मध्य मजबूत धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

शोध विधि :

वर्तमान अध्ययन की शोध विधि में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग उसके उद्देश्यों व विशेषताओं को ध्यान में रखकर किया गया है। शोध समस्या का विषय ‘‘उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं बहु बुद्धि का अध्ययन ’’से सम्बन्धित है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श के रूप में 500 छात्र एवं 500 छात्राओं को यादृच्छिक न्यादर्श विधि से चयनित किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :

इस अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने उपकरण के रूप में 1. सांवेगिक बुद्धि परीक्षण – डॉ. अरूण कुमार सिंह एवं डॉ. श्रुतिनारायन एवं 2. डॉ. यशपाल सिंह एवं योगेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा स्वनिर्मित बहु बुद्धि प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, June 2024

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने आंकड़ो का ऑकलन कर क्रान्तिक मान प्राप्त करके प्राप्त परिणाम का सारणीयन व उनकी परिकल्पनाओं के आधार पर व्याख्या की है जो इस प्रकार

है - परिकल्पना संख्या-01 **उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है का सत्यापन।**

तालिका सं 1: **उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन**

क्रम सं.	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक मान	सार्थकता
1	छात्र	500	17.61	3.30	0.20	1.40	असार्थक
2	छात्राएं	500	17.89	3.28			

तालिका सं0-01 **के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का परीक्षण प्राप्ताँकों का मध्यमान** 17.61 **एवं मानक विचलन** 3.30 **ज्ञात हुआ तथा छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान** 17.89 **एवं मानक विचलन** 3.28 **प्राप्त हुआ। दोनों के मध्य मानों में अन्तर पाया गया, यह अन्तर सार्थक है या नहीं, के लिए क्रान्तिक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान** 1.40 **प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान** 1.96 **एवं** 2.58 **से कम पाया गया। अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना संख्या**-01 **उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है- स्वीकृत की जाती है। परिकल्पना संख्या**-02 **उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है का सत्यापन।**

तालिका सं 2: **उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन**

क्रम सं.	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक मान	सार्थकता
1	छात्र	500	40.67	16.82	1.03	1.15	असार्थक
2	छात्राएं	500	41.86	16.10			

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, June 2024

तालिका सं0 02 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की बहु-बुद्धि का परीक्षण प्राप्ताँकों का मध्यमान 40.67 एवं मानक विचलन 16.82 ज्ञात हुआ तथा छात्राओं की बहु-बुद्धि का मध्यमान 41.86 एवं मानक विचलन 16.10 प्राप्त हुआ। दोनों के मध्य मानों में अन्तर पाया गया, यह अन्तर सार्थक है या नहीं, के लिए क्रान्तिक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान 1.15 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 एवं 2.58 से कम पाया गया। अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु-बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना संख्या-02 उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु-बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है- स्वीकृत की जाती है।

प्रस्तुत शोध पत्र का निष्कर्ष :

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बहु-बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. भटनागर, आर. पी. एवं भटनागर, ए. बी. एवं भटनागर, अनुराग (2015), शिक्षा अनुसंधानः प्रक्रिया, प्रकार एवं सांख्यिकीय आधार, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. गुप्ता, के. एल. (2010), परिमाणात्मक विधियाँ, नवनीत प्रकाशन गृह, सदर बाजार, आगरा-1।
3. सिंह, गया (2013), शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. सिंह, रामपाल एवं शर्मा, ओ. पी. (2005), शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा-2।
5. भटनागर, ए. बी. एवं भटनागर, मीनाक्षी एवं भटनागर, अनुराग (2014), अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
6. गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, अलका (2018), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान-सिद्धान्त एवं व्यवहार, शारदा पुस्तक भवन, यूनिवर्सिटी रोड, प्रयागराज।
7. गुप्ता, एस. पी. (2003), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, 11 यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, June 2024

8. अग्रवाल, जे. सी. एवं अग्रवाल, एस. (1990), भारत में शिक्षा, कन्सेप्ट पब्लिकेशन कम्पनी, ए/15-16, कामर्शियल ब्लॉक, नई दिल्ली।
9. शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार (1953), माध्यमिक शिक्षा आयोग रिपोर्ट, नई दिल्ली।
10. तिवारी, दीपा एवं सक्सेना, शालिनी (2013) 10+2 स्तर पर कला तथा विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं के स्वप्रत्यय एवं सांवेगिक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन, रिसर्च लिंक 107, 11(12), 123-125.
11. बी. कुप्पूस्वामी (1974), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, स्टेरलिंग पब्लिशिंग लि. नई दिल्ली।
12. अग्रवाल, जे. सी. (1975), शैक्षिक अनुसंधान, आर्य बुक डिपो।
13. 35. त्रिपाठी, सुनील तथा सिंह, जय (2017), ''जौनपुर जले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शालेय
14. डॉ.ज्योति ताम्रकार, प्राचार्य, एस. वी. एन. कॉलेज, सिरोंजा, सागर, मध्यप्रदेश